जीव को सिखापन

सुन मेरे जीव कहूं वृतान्त, तोको एक देऊं द्रष्टांत।
सो तूं सुनियो एकै चित, तोसों कहत हों करके हित।। १ ।।

हे मेरे जीव ! तुझे एक दृष्टान्त देकर हकीकत बताती हूं। उसे सुन। तू सावधान होकर सुनना। मैं तुझे प्यार करके कहती हूं।

परीछितें यों पूछ्यो प्रश्न, सुकजी मोको कहो वचन।
चौदे भवन में बड़ा जोए, मोको उत्तर दीजे सोए।। २ ।।

राजा परीक्षित ने शुकदेवजी से प्रश्न किया कि चौदह लोकों में सबसे बड़ा कौन है? मुझे इसका उत्तर दो।

तब सुकजी यों बोले प्रमान, लीजो वचन उत्तम कर जान।
चौदे भवन में बड़ा सोए, बड़ी मत का धनी जोए।। ३ ।।

तब शुकदेवजी इस प्रकार प्रमाण देकर बोले और कहा कि इन वचनों को अच्छी तरह ग्रहण करना। चौदह भवनों में सबसे बड़ा वही है जिसके पास जागृत बुद्धि है।

भी राजाऐं पूछा यों, बड़ी मत सो जानिए क्यों।
बड़ी मत को कहूं विचार, लीजो राजा सबको सार।। ४ ।।

राजा ने फिर कहा कि बड़ी मत (बुद्धि) की पहचान क्या है? शुकदेवजी कहते हैं कि बड़ी मत का विचार कहता हूं, यह सारे ज्ञान का सार है।

बड़ी मत सो कहिए ताए, श्री कृष्णजी सों प्रेम उपजाए।
मत की मत तो ए है सार, और मत को कहूं विचार।। ५ ।।

बड़ी मत उसको कहते हैं जो श्री कृष्णजी से प्रेम उत्पन्न कराए। सबके ज्ञान का एक यही सार है। दूसरी बुद्धि का विचार बताता हूं।

बिना श्री कृष्णजी जेती मत, सो तूं जानियो सबे कुमत।
कुमत सो कहिए किनको, सबथें बुरी जानिए तिनको।। ६ ।।

श्री कृष्णजी से प्रेम उत्पन्न कराने वाली बुद्धि के सिवाय जितनी बुद्धियां हैं उनको कुबुद्धि समझना। परीक्षित पूछता है कि कुमति किसको कहते हैं? शुकदेवजी कहते हैं कि जो सबसे बुरी बुद्धि हो।

ऐसो तिन को कहा वृतांत, सो भी राजा तोको कहूं द्रष्टांत।
सुन राजा कहूं सो जुगत, जासों पेहेचान होवे दोऊ मत।। ७ ।।

परीक्षित कहता है कि उसकी क्या हकीकत है? शुकदेवजी कहते हैं कि एक दृष्टान्त देता हूं उसे सुनो। हे राजा! मैं ऐसी युक्ति से बताता हूं जिससे दोनों तरह की बुद्धियों की (कुमति और बड़ी मत) पहचान हो जाए।

श्री कृष्णजी सों प्रेम करे बड़ी मत, सो पोहोंचावे अखंड घर जित।
ताए आड़ो न आवे भवसागर, सो अखंड सुख पावे निज घर।। ८ ।।

बड़ी मत श्री कृष्णजी से प्रेम पैदा करती है। जीव को अखण्ड सुख में पहुंचाती है। दुबारा जीव भवसागर में नहीं आता और वह अपने घर (योगमाया) का अखण्ड सुख प्राप्त करता है।

Nijanand App

ए सुख या मुख कह्यो न जाए, याको अनुभवी जाने ताए।
ए कुमत कहिए तिनसे कहा होए, अंधकूप में पड़िया सोए।। ९ ।।

इस अखण्ड सुख को मुख से कहा नहीं जाता। इसको तो अनुभव से ही जाना जाता है। कुमति से क्या होता है? अन्धे की तरह कुएं में गिरना पड़ता है अर्थात् भवसागर में डूबना पड़ता है।

सब दुखों में बुरा ए दुख, कुमत करे धनीसों बेमुख।
केतो कहूं या दुख को विस्तार, जाके उलटे अंग इंद्री विकार।। १० ।।

सब दुःखों में से सबसे बुरा दुःख यह है जो कुबुद्धि के कारण धनी से विमुख होना पड़ता है। इस दुःख का विस्तार कहां तक बताऊं? इससे सारे गुण, अंग, इन्द्री उलटे हो जाते हैं।

दोऊ मत को कह्यो प्रकार, ए ब्रह्मसृष्टी करें विचार।
जाको जाग्रत है बड़ी बुध, चेते अवसर जाके हिरदे सुध।। ११ ।।

दोनों प्रकार की बुद्धियों की हकीकत बताई है, जिसका विचार ब्रह्मसृष्टि करेगी। जिसके हृदय में बड़ी बुद्धि है वह इस समय जागृत होकर अपने घर परमधाम की सुध हृदय में लेगी।

ए सुकजी के कहे वचन, नीके फिकर कर देखो मन।
बोहोत फिकर की नहीं ए बात, ए समया हाथ ताली दिए जात।। १२ ।।

शुकदेवजी के इन वचनों को, हे मन ! विचार कर देखो। यहां बहुत सोच विचार करने की बात नहीं है, क्योंकि समय तो हाथ की ताली के समान बीता जाता है।

तेरी गिनती बांधी स्वांसों स्वांस, तिनको भी नाहीं विश्वास।
केते रहे बाकी तेरे स्वांस, एक स्वांस की भी नाहीं आस।। १३ ।।

तेरा जीवन सांसों से बंधा है। इन सांसों का भी विश्वास नहीं है। तेरे सांस कितने बाकी रहे। सांस पूरे होने पर एक सांस की भी आशा नहीं है।

स्वांस तो खिन में कई आवें जाएं, गए अवसर पीछे कछू न बसाए।
तिन कारन सुन रे जीव सही, बड़ी मत मैं तोको कही।। १४ ।।

एक क्षण में तो कई सांस आते जाते हैं। समय निकल जाने के बाद कुछ वश में नहीं रहता। इस वास्ते, हे मेरे जीव ! सुनो, बड़ी मत की पहचान मैंने तुमको बताई है।

जो जोगवाई है तेरे हाथ, सो या मुखथें कही न जात।
एते दिन तें ना करी पेहेचान, तैसी करी ज्यों करे अजान।। १५ ।।

हे जीव ! यह मनुष्य तन जो तेरे हाथ में है, उसकी महिमा इस मुख से नहीं कही जाती। इतने दिन तक तूने पहचान नहीं की और ऐसा किया जैसे मूर्ख करता है।

अब ए वचन विचारो मन, साख दई सुकजी के वचन।
भी वचन कहूं सुन मेरे जिउ, जिन छोड़े चरन खिन पिउ।। १६ ।।

अब जो वचन शुकदेवजी ने कहे हैं उनको मन से विचार करके देखो। और भी कहता हूं। मेरे जीव! सुनो, एक क्षण के लिए भी धनी के चरणों को नहीं छोड़ना।

निज घर पिउ को लीजे प्रकास, ज्यों वृथा न जाय एक स्वांस।
ग्रह गुन इंद्री भर तूं पांओं, ऐसा फेर न पाईए दाओ।। १७ ।।

अपने घर और धनी की पहचान कर, जिससे एक सांस भी व्यर्थ न जाए। अपने गुण, अंग, इन्द्रियों को भी इसी रास्ते पर लाओ। फिर ऐसा समय नहीं मिलेगा।

Nijanand App

भरम भान के कहे वचन, बड़ी मत ले ज्यों होए धंन धंन।
ए भरम की नींद उड़ाए के दे, पेहेचान पिउ की नीके कर ले।। १८ ।।

यह वचन मैंने भ्रम मिटाकर कहे हैं। जिससे तू बड़ी मत को लेकर धन्य-धन्य हो जा। इस भ्रम की नींद को उड़ा दे और अच्छी तरह से धनी की पहचान कर ले।

मुखथें वचन कहे तो कहा, जो छेद के अजूं ना निकस्या।
अगलों ने किव करी अनेक, तें भी कछुक करी विसेक।। १९ ।।

हे जीव ! मुख से वचन कहने से क्या होता है? यदि तेरे अन्दर वचन छेदकर निकले नहीं, अर्थात् तू रहनी में नहीं आया। आगे भी लोगों ने बड़ी-बड़ी कविताएं की हैं। तूने भी उनसे कुछ अधिक ही किया है।

पर सांचा तो जो होए गलतान, तो भले मुख निकसी ए बान।
ए बानी मेरी नाहीं यों, और किव करत हैं ज्यों।। २० ।।

यह वाणी तभी सच्ची है जब तू सुनकर गलित गात (गलित गात्र) हो जाए। यह मेरी वाणी ऐसी नहीं है जैसे दूसरे कवियों की होती है।

ए गुसा किया मेरे जीव के सिर, ना तो और किवकी भांत कहूं क्यों कर।
आतम मेरी है अति सुजान, अछरातीत निध करी पेहेचान।। २१ ।।

यह मैंने अपने जीव को समझाने के लिए ही गुस्से से कहा है। नहीं तो दूसरे कवियों की तरह क्यों कहती? मेरी आत्मा जागृत है। इसने अक्षरातीत धनी की पहचान की है।

अब सांचा तो जो करे रोसन, जोत पोहोंची जाए चौदे भवन।
ए समया तो ऐसा मिल्या आए, चौदे भवन में जोत न समाए।। २२ ।।

अब सच्चा तो तू तब है, जब चौदह भवनों में इस वाणी को फैलाए। यह समय तो ऐसा सुन्दर मिला है कि इस ज्ञान का तेज चौदह लोकों में नहीं समाएगा।

यों हम ना करे तो और कौन करे, धनी हमारे कारन दूजा देह धरे।
आतम मेरी निज धाम की सत, सो क्यों ना करे उजाला अत।। २३ ।।

यह काम यदि हम न करेंगे तो दूसरा कौन करेगा? हमारे लिए धनी ने दूसरा तन धारण किया है। मेरी आत्मा परमधाम की सच्ची है। वह निश्चय ही चौदह लोकों में उजाला करेगी।

श्री सुंदरबाई के चरन प्रताप, प्रगट कियो मैं अपनों आप।
मोसों गुनवंती बाईऐं किए गुन, साथें भी किए अति घन।। २४ ।।

श्री श्यामाजी के चरणों के प्रताप से मैंने अपने आपको जाहिर किया है। मुझ पर गुणवन्तीबाई ने (गोवर्धन ठाकुर ने) कृपा की है और सुन्दरसाथ ने भी बहुत कृपा की है।

जोत करूं धनी की दया, ए अंदर आए के कह्या।
उड़ाए दियो सबको अंधेर, काढ़्यो सबको उलटो फेर।। २५ ।।

स्वयं राजजी महाराज ने अन्दर बैठकर कहा है। इस ज्ञान को मैं उनकी कृपा से ही प्रकाशित करती हूं। सबके अन्दर का अज्ञान का अंधेरा मिटा देती हूं। सबकी उलटी विचार-धारा समाप्त कर देती हूं।

Nijanand App

इंद्रावती प्रगट भई पिउ पास, एक भई करे प्रकास।
अखंड धाम धनी उजास, जाग जागनी खेलें रास।। २६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी पिया के निकट होकर जाहिर हुईं और उनसे एक रस होकर इन वचनों का प्रकाश कर रही हैं। धाम धनी के अखण्ड ज्ञान से जागृत होकर जागनी रास खेल रही हैं।

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ ५३३ ॥

आंखां खोल तूं आप अपनी, निरख धनी श्रीधाम।
ले खुसवास याद कर, बांध गोली प्रेम काम।। १ ।।

हे मेरी आत्मा ! तू अपनी आंखें खोलकर धाम के धनी को देख। उनकी लीलाओं को याद कर, प्रेम के बंध बांध।

प्रेम प्याला भर भर पीऊं, त्रैलोकी छाक छकाऊं।
चौदे भवन में करूं उजाला, फोड़ ब्रह्मांड पिउ पास जाऊं।। २ ।।

मैं धनी के प्रेम के प्याले भर भर कर पिऊं तथा चौदह लोकों को धनी की मस्ती में छका दूं। इस तरह चौदह लोकों में ज्ञान का प्रकाश करके क्षर ब्रह्माण्ड को फोड़कर बेहद से परे पिया के पास जाऊं।

वाचा मुख बोले तूं वानी, कीजो हांस विलास।
श्रवना तूं संभार आपनी, सुन धनी को प्रकास।। ३ ।।

हे मेरी जबान ! तुम पिया की वाणी बोलो। हांस और विनोद करो। हे कानो ! तुम सावचेत (सावधान) होकर धनी के वचनों को सुनना।

कहे विचार जीव के अंग, तुम धनी देखाया जेह।
जो कदी ब्रह्मांड प्रले होवे, तो भी ना छोडूं पिउ नेह।। ४ ।।

जीव के सभी अंग विचार कर कहते हैं कि तुमने हमें धनी के दर्शन कराए हैं। इसलिए अब ब्रह्माण्ड का प्रलय भी हो जाए तो भी प्रीतम का प्रेम नहीं छोड़ेंगे।

खोल आंखां तूं हो सावचेत, पेहेचान पिउ चित ल्याए।
ले गुन तूं हो सनमुख, देख परदा उड़ाए।। ५ ।।

हे मेरी आंखो ! तुम सावचेत (सावधान) होकर पिया की पहचान करो और उन्हें चित्त में बिठाओ। धनी के गुणों को लेकर अन्दर का परदा उड़ाकर धनी के सामने हो जाओ।

एते दिन वृथा गमाए, किया अधम का काम।
करम चंडालन हुई मैं ऐसी, ना पेहेचाने धनी श्रीधाम।। ६ ।।

ओछे काम करके मैंने इतने दिन फिजूल (बेकार) में गंवाए। मैं इतनी कर्महीन हो गई कि धाम के धनी को नहीं पहचाना।

भट परो मेरे जीव अभागी, भट परो चतुराई।
भट परो मेरे गुन प्रकृती, जिन बूझी ना मूल सगाई।। ७ ।।

हे मेरे अभागे जीव ! तुझे आग लग जाए। चतुराई को तथा मेरे प्राकृतिक गुणों को आग लग जाए। इन्होंने मूल सम्बन्ध (धाम धनी) को नहीं पहचाना।

Nijanand App